

। अष्टक शनिवारचे ।

उत्तराभिरोख मूख सरळ नाक गोजिरे।
डावे करीं हृदय धरीं सव्य उभा साजिरे।
पुच्छ वरुनि मुरड घालुनि झाप उभा ठाकिला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥1॥

दधि मधु पयाब्धि शर्करेने स्नान घातलें।
शुद्धोदक आणुनि भक्तें भीम अंग धूतले।
सुवर्ण यज्ञोपवित पितांबर जरिचा नेसला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥2॥

किरिट सकट मुगुट ठेविलासे मस्तकावरी।
कुंडलाचे तेज झळके कर्णी दोन्ही दोपरी।
भाळीं कस्तुरी टिळा सुगंध गंध रेखिला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥3॥

कडे तोडे हिरे खडे अंगुलीस मुद्रिका।
साखळ्याने नूपुराने शोभतसे पादुका।
रत्नखचित कटी दोर झार कसुनि बांधिला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥4॥

दुलडी नउ लडी लडी लडीने शोभतो गळा।
पुतळिमाळ बोरमाळ चंद्रहार वेगळा।
पदक सरी नानापरी यानें कंठ झांकला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥5॥

पुष्प वाहे जाई जुई बकुल आणि शेवंती।
चंपकादि पारिजात श्वेतकमल मालती।
धूपदीप नैवेद्यादि भक्ष्य भोज्य अर्पिला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥6॥

आरति करीं घेउनि द्वारीं भक्त उभे ठाकिती।
ओवाळताति प्रेमेकरुनि गुणनिधान मारुती।
नौबत नगारे झांगटाने नाद कोंडला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥7॥

वारवार शनीवार निघत वाहन बाहेरी।
पालखींत बसुनि मूर्ति भक्त गर्जना करी।
माणिकदास त्या भिमास नेत्रिं रूप देखिला।
चाळकापुरांत भीम या परीने देखिला॥8॥